इकाई 8 प्रयोजनमूलक हिंदी : वाक्य संरचना

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 वाक्य संरचना का अभिप्राय और स्वरूप
8.3 सामान्य हिंदी वाक्य संरचना की विशेषताएँ
8.4 साहित्यिक हिंदी की वाक्य संरचना
8.5 प्रयोजनमूलक हिंदी वाक्य संरचना की विशेषताएँ
8.5.1 कार्यालय, हिंदी की वाक्य संरचना
8.5.2 व्यापार, वाणिज्य एवं बैंकिंग हिंदी की वाक्य संरचना
8.5.3 वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना
8.5.4 जनसंचार की हिंदी की वाक्य संरचना
8.6 सारांश
8.7 शब्दावली
8.8 सहायक पुस्तकें
8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- वाक्य संरचना के विभिन्न घटकों के बारे में बता सकेंगे,
- हिंदी की आधारभूत सामान्य वाक्य रचना की जानकारी दे सकेंगे,
- सामान्य हिंदी के संदर्भ में साहित्यिक हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे,
- प्रयोजनमूलक हिंदी किसे कहते हैं, इसका विवरण देते हुए प्रयोजनमूलक हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषताओं के बारे में बता सकेंगे,
- प्रयोजनमूलक हिंदी की एक विशिष्ट प्रयुक्ति के रूप में "कार्यालय हिंदी" की वाक्य संरचना की विशेषताओं का उल्लेख सकेंगे,
- प्रयोजनमूलक हिंदी की ही एक अन्य प्रयुक्ति बैंकिंग हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषता को स्पष्ट कर सकेंगे,
- वैज्ञानिक हिंदी किसे कहते हैं तथा वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे, और
- जनसंचार की हिंदी के प्रयोग के विभिन्न क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए जनसंचार की हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषताओं के बारे में बता सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

आज से चार-पाँच दशक पूर्व तक भाषा सीखने का मतलब साहित्य सीखना समझा जाता था। इसलिए विद्यालयों और कॉलेजों में भाषा के नाम पर भाषा का साहित्य पढ़ाया जाता था। धीरे-धीरे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास के साथ संसार की सभी भाषाओं में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर सामग्री उपलब्ध होने लगी और इसका दूसरी भाषाओं में आदान-प्रदान होने लगा । विश्व के विभिन्न देशों के लोग व्यापारिक, राजनयिक तथा राजनीतिक प्रयोजनों से एक देश से दूसरे देश में आने-जाने लगे हैं, इस प्रकार ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र का विस्तार हो रहा है। इसके साथ ही राष्ट्रों के सामाजिक और राजनीतिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नए-नए व्यवसायों के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया है। इन क्षेत्रों में विभिन्न प्रयोजनों के लिए जिस भाषा रूप का प्रयोग होता है उसे हम प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं। इस प्रकार

एक ओर कार्यालयों और बैंकों में तथा दूसरी ओर जनसंचार साहित्य और तकनीकी क्षेत्रों में जिस हिंदी का हम प्रयोग करते हैं उसे प्रयोजनमूलक हिंदी कह सकते हैं। जिस प्रकार हमारे समाज में विभिन्न कार्य क्षेत्रों में विविधता है उसी प्रकार प्रयोजनमूलक हिंदी के रूपों में भी विविधता है। इन अलग-अलग क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी की आधारभूत वाक्य संरचना तो समान होती है लेकिन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली इस हिंदी की तकनीकी शब्दावली अलग-अलग होती है।

इस इकाई में हम प्रयोजनमूलक हिंदी की वाक्य संरचना के अंतर्गत सामान्य हिंदी की वाक्य संरचना का विवरण प्रस्तुत करने के बाद हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों में प्रयुक्त होने वाले भाषा रूपों तथा उन विशिष्ट क्षेत्रों की वाक्य संरचनाओं की विशेषताओं के बारे में विस्तार-पूर्वक चर्चा करेंगे।

8.2 वाक्य संरचना का अभिप्राय और स्वरूप

वाक्य संरचना से तात्पर्य वाक्य के ऐसे गठन से है जो अलग-अलग घटकों से मिलकर बना होता है। ये घटक एक-दूसरे से व्याकरणिक संबंध से जुड़े होते हैं। इन घटकों को वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया, क्रिया विशेषण आदि कहा जाता है। ये घटक वाक्य में एक विशेष क्रम से जुड़े होते हैं तथा वाक्य में इन घटकों का अपना-अपना नियत प्रकार्य स्थान होता है। वाक्य संरचना के ये घटक वाक्य विन्यास के स्तर पर एक-दूसरे से संबद्ध होते हैं, जैसे :

पिता जी दफ्तर गए।

इस वाक्य संरचना को व्याकरणिक आधार पर नीचे दिए प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है।

कर्ता (पिता जी) कर्म (दफ्तर) गए (क्रिया)।

वाक्य में शब्दों (पदों) का क्रम

हर भाषा की वाक्य संरचना में पदों का एक निश्चित क्रम होता है। हिंदी में यह क्रम कर्ता-कर्म और क्रिया है। अंग्रेजी की वाक्य संरचना में कर्ता-क्रिया और कर्म का क्रम रहता है। जैसे

(कर्ता)	(कर्म)	(क्रिया)	
स्टैनो	पत्र	टाइप कर रहा है	(हिंदी)
(कर्ता)	(क्रिया)		(कर्म)
Steno	is typing	the letter	(अंग्रेजी)

कभी-कभी बल देने के लिए इन व्याकर्णिक कोटियों के स्थान में भी परिवर्तन हो जाता है।

वाक्य के विस्तार के लिए संज्ञा से पूर्व विशेषण और क्रिया से पूर्व क्रिया विशेषण का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे — ऊपर दिए वाक्य का विस्तार निम्नलिखित प्रकार से हो सकता है :

मेरा स्टेनो — एक जरूरी पत्र — टाइप कर रहा है।

एक और उदाहरण देखिए — मोहन — कार्यालय में काम करता है।

विस्तार — मेरा भाई मोहन — सरकारी कार्यालय में काम करता है।

8.3 सामान्य हिंदी वाक्य संरचना की विशेषताएँ

इससे पूर्व आप वाक्य संरचना के अभिप्राय और स्वरूप के बारे में पढ़ चुके हैं। यहाँ हम सामान्य हिंदी की वाक्य संरचना की कुछ विशेषताओं के बारे में विचार करेंगे।

आइए, पहले हम इसके प्रयोग के क्षेत्र की चर्चा करें। सामान्य हिंदी वाक्य संरचना का व्यवहार समाज के शिक्षित वर्ग द्वारा लिखित रूप में या बोल-चाल के लिए किया जाता है। इसका व्यवहार सामान्य रूप से हिंदी भाषी क्षेत्र में होता है। यह हिंदी भाषा क्षेत्र में शिक्षा का माध्यम भी है। इसे हिंदी का मानक रूप कह सकते हैं। यही हमारे देश की राष्ट्रभाषा भी है। इसी हिंदी का व्यवहार स्टेशन, डाकघर, बाजार, स्कूल, जनसभाओं और कार्यालयों आदि सार्वजनिक स्थानों में तथा आपसी बातचीत में किया जाता है।

सामान्य हिंदी की दो शैलियाँ हैं। एक में तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक होता है तो दूसरी उर्दू बहुल होती है। वार्तालाप की हिंदी में इन दोनों के मिले-जुले रूप का प्रयोग होता है। इसी का व्यवहार हिंदी

फिल्मों और समाचार पत्रों की भाषा में होता है। इस प्रकार सामान्य हिंदी वाक्य संरचना में जहां संस्कृत तत्सम शब्दों के साथ अरबी-फारसी मूल के शब्दों का प्रयोग होता है वहीं देशज शब्दों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

इस प्रकार हिंदी का शब्द भंडार तीन स्रोतों से भर रहा है।

हिंदी भाषा का क्षेत्र काफी व्यापक है। इसका व्यवहार जम्मू से लेकर विध्यांचल तक तथा राजस्थान से बिहार तक होता है। इसलिए इसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक तत्वों का भी अच्छा मिश्रण मिलता है। संविधान द्वारा स्वीकृत हिंदी से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह पूरे देश की सामासिक, संस्कृति का वहन करेगी।

हम सामान्य हिंदी के अभिलक्षणों को संक्षेप में निम्नलिखित प्रकार से प्रदर्शित कर सकते हैं :

1) इसका व्यवहार लिखित रूप में और बोलचाल के रूप में होता है।
2) इसका व्यवहार अनौपचारिक प्रयोजनों के लिए होता है।
3) इसमें हिंदी और उर्दू के साथ देशज तीनों स्रोतों के शब्दों में होता है।
4) यह हिंदी देश के विभिन्न क्षेत्रों की सामासिक संस्कृति के तत्वों को वहन करती है।
5) यह हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों या भाषा रूपों की आधारभूत संरचना है।

सामान्य हिंदी की वाक्य संरचना

आप हिंदी की आधारभूत संरचना के बारे में खंड 1, इकाई 4 में पढ़ चुके हैं। यहाँ हम संक्षेप में सामान्य हिंदी की आधारभूत वाक्य संरचना का उल्लेख करेंगे। इनके उदाहरण नीचे दिए हैं :

क) कर्ता × क्रिया (अकर्मक)	राकेश सोता है।
ख) कर्ता × स्थान × क्रिया	राकेश दफ्तर जाता है।
ग) कर्ता × पूरक × क्रिया	राकेश अधीक्षक है। सहायक बीमार है। निदेशक कार्यालय में हैं।
घ) कर्ता × कर्म × क्रिया (सकर्मक)	सहायक टिप्पणी लिखता है।
ङ) कर्ता × कर्म × कर्म × क्रिया (द्विकर्मक)	खजांची चपरासी को वर्दी देता है।
च) कर्ता × कर्म × पूरक × क्रिया	अधिकारी स्टेनो को अक्लमंद समझता है।

नोट : कर्म = गौणकर्म
कर्म = प्रधान कर्म

इन वाक्य साँचों को हम बीज वाक्य साँचे कह सकते हैं जिनके द्वारा हिंदी के सभी प्रकार के वाक्यों का निर्माण हो सकता है। जैसे कर्ता × क्रिया (अकर्मक) वाक्य साँचे को निम्नलिखित उदाहरणों से प्रदर्शित किया जा सकता है। इस वाक्य साँचे के दो मूल घटक कर्ता और क्रिया हैं। इन दोनों घटकों का और अधिक विस्तार किया जा सकता है, उदाहरणार्थः

1) इस अनुभाग के सभी कर्मचारी	आ गए हैं।
2) दिल्ली जाने वाली गाड़ी	छूट चुकी है।
3) हमारा उच्चतम अधिकारी	(छुट्टी) जा रहा है।

वाक्य संरचना के अनिवार्य और ऐच्छिक घटक किसी वाक्य संरचना में दो प्रकार के घटक होते हैं। इन्हें अनिवार्य घटक और ऐच्छिक घटक कहते हैं। जिन अंशों के बिना वाक्य व्याकरण या अर्थ की दृष्टि से अधूरा रहता है उन्हें अनिवार्य घटक कहते हैं, जैसे—

राकेश सोता है।

इस वाक्य में "राकेश" (कर्ता) और "सोता" है (अकर्मक क्रिया) ये दोनों ही वाक्य के अनिवार्य घटक हैं। इनमें से किसी एक घटक को हटा देने पर वाक्य पूर्ण नहीं रहेगा। इनके अतिरिक्त वाक्य में कुछ घटक ऐसे होते हैं जिन्हें वाक्य से निकाल देने पर भी व्याकरणिक दृष्टि से वाक्य पूर्ण रहता है। जैसे

रमेश रोज देर से उठता है।

इस वाक्य में "रमेश" और "उठता है" "अनिवार्य घटक है" जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है लेकिन "रोज" "देर से" आदि घटकों को निकाल देने पर भी वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण रहता है, इसलिए इन्हें "ऐच्छिक घटक" कहते हैं।

वाक्य संरचना में कम से कम दो घटकों का होना अनिवार्य होता है। ये घटक हैं संज्ञा (कर्ता) और क्रिया। इनके बिना कोई पूर्णांग वाक्य नहीं बन सकता। कभी-कभी कुछ अल्पांग वाक्यों में ऐसा प्रतीत हो सकता है कि उनमें सभी घटक नहीं हैं लेकिन उनकी आंतरिक संरचना में पूर्ण वाक्य विद्यमान रहता है, जैसे—

कौन ?	=	(आप कौन हैं?)
ओ रिक्शा!	=	(रिक्शा वाले रुको या इधर आओ)
आइए	=	(आप अंदर आइए)

वाक्यों में (विभिन्न घटकों में) अन्विति

हिंदी वाक्यों में अन्विति का बहुत महत्व है। अन्विति वाक्य में विभिन्न घटकों के लिंग-पुरुष-वचन के अनुसार होती है। यह अन्विति कहीं "क्रिया" की "कर्ता" या कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार होती है या विशेषण की संज्ञा के लिंग-वचन के अनुसार होती है। आइए, पहले क्रिया की अन्विति पर विचार करें।

सामान्यतः वाक्य में क्रिया की अन्विति कर्ता के साथ होती है, जैसे :

क) अकर्मक वाक्य	—	अधीक्षक दस बजे दफ्तर आता है।	(वर्तमान काल)
		सहायक दौरे पर गया।	(भूतकाल)
		कल स्टेनों देर से दफ्तर आएगी।	(भविष्यत काल)
ख) सकर्मक वाक्य	—	अधिकारी पत्र पर हस्ताक्षर करता है।	(वर्तमान काल)
		शीला ने पत्र टाइप किया।	(भूतकाल)
		आज कर्मचारी वेतन लेंगे।	(भविष्यत काल)

कभी-कभी "क्रिया" की अन्विति कर्ता के बजाय "कर्म" के साथ होती है। सामान्य भूतकाल के वाक्यों में यदि क्रिया सकर्मक हो तो क्रिया की अन्विति कर्म के साथ होती है, जैसे :

अनुभाग अधिकारी ने आवतियाँ देखीं।
कमला (लिपिक) ने बिल बनाया।

पहले वाक्य में क्रिया "देखना" की अन्विति आवतियाँ (स्त्रीलिंग-बहुवचन) से है और दूसरे वाक्य में क्रिया "बनाना" की अन्विति बिल (पुल्लिंग-एकवचन) से है।

कभी-कभी कुछ क्रियाओं के साथ दो कर्मों का प्रयोग होता है। इनमें पहला कर्म "गौण" होता है और दूसरा "प्रधान"। गौण कर्म "चेतन" और प्रधान कर्म "अचेतन" होता है। इन द्विकर्मक वाक्यों में सामान्य भूतकल में क्रिया की अन्विति मुख्य (अचेतन) कर्म से होती है, जैसे :

मैंने लिपिक को चार फाइलें दीं।
अनुभाग अधिकारी ने स्टेनों को दो पत्र दिए।

परंतु जिन वाक्यों की अन्विति के साथ "को" परसर्ग का प्रयोग होता है, उनमें क्रिया की अन्विति न तो "कर्ता" से होती है और न "कर्म" से। ऐसे वाक्यों में क्रिया पुल्लिंग एकवचन में रहती, जैसे :

निदेशक ने प्रशासन अधिकारी को बुलाया।
कमला ने शीला को समझाया।

द्विकर्मक क्रियाओं वाले वाक्यों में क्रिया की अन्विति हमेशा मुख्य कर्म से होती है :

प्रधान लिपिक ने धोबी को चार परदे दिए।
भंडार लिपिक ने मुझे स्टेशनरी दी।

कर्मवाच्य वाक्यों में भी "क्रिया" की अन्विति "कर्ता" के बजाय "कर्म" से होती है। इन वाक्यों में "कर्ता" के साथ "से" या "के द्वारा" का प्रयोग होता है, जैसे :

स्टेनों से पत्र नहीं पढ़ा जाता।

सहायक द्वारा फाइल पर टिप्पणी लिखी गई।

कर्मवाच्य वाक्यों में प्रायः कर्ता का लोप हो जाता है, क्योंकि कार्यालयी संदर्भ में कार्य सरकारी तंत्र द्वारा किया जाता है। किसी व्यक्ति द्वारा नहीं किया जाता है। जैसे :

पत्र का उत्तर भेज दिया गया।

उन्हें निदेशक का आदेश सुनाया गया।

विशेषण की संज्ञा से और सार्वनामिक विशेषण की संज्ञा से अन्विति

वाक्य में संज्ञा से विशेषण की और संबंधी से संबंधवाचक की अन्विति होती है। यह अन्विति लिंग-वचन के अनुसार होती है। जैसे :

संज्ञा से विशेषण की अन्विति—

मुझे नीली कमीज अच्छी लगती है।

उसे फीकी चाय पसंद है।

नोटशीट के लिए हरा कागज खरीदें।

सार्वनामिक विशेषण की संज्ञा से अन्विति—

मेरा कार्यालय दिल्ली में है।

इसके लिए नई फाइल खोलिए।

सामान्य हिंदी की वाक्य संरचना की संक्षिप्त जानकारी देने के बाद अब हम आपको साहित्यिक हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषताओं के बारे में बताएँगे।

8.4 साहित्यिक हिंदी की वाक्य संरचना

साहित्यिक हिंदी का स्वरूप सामान्य हिंदी से मिलता-जुलता है लेकिन फिर भी इनमें कही-कहीं भिन्नता है। साहित्यिक हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता यह कि इसमें अभिधा, लक्षणा और व्यंजना आदि शब्द शक्तियों का व्यापक रूप से प्रयोग होता है। अभिधा के द्वारा हम सामान्य अर्थ का ग्रहण करते हैं परंतु लक्षणा के द्वारा हमें मुख्य अर्थ के बजाय एक नए ही अर्थ का बोध होता है। उदाहरणार्थ कोई आपसे पूछे, "तुम्हारा घर कहाँ है"? तो आपका उत्तर होगा "गाँव में घुसते ही सड़क पर है"। यहाँ "सड़क पर" का अभिप्राय "सड़क के ऊपर" न होकर सड़क के पास है। इस प्रकार "सड़क के ऊपर" मुख्यार्थ है जबकि लक्ष्यार्थ "सड़क के पास" है। एक और उदाहरण से इसे समझने की कोशिश कीजिए। एक और वाक्य लीजिए "वह तो गधा है"। यहाँ "गधे" का मुख्यार्थ एक प्राणि विशेष है जबकि इसका लक्षणार्थ है "मूर्ख"। सामान्यतः समाज में "गधे" को मूर्ख और "गाय" को सीधा-सादा प्राणी समझा जाता है। यानी अगर किसी को "गाय" कहा जाए तो इसका अर्थ होगा कि वह व्यक्ति बहुत सीधा है।

"व्यंजना" का संबंध उस भाषा की विशिष्ट संस्कृति, परंपरा, रीतिरिवाजों और संदर्भ से होता है। जैसे कली से कोमलता, कांटे से क्रूरता और गंगाजल से पवित्रता का बोध होता है। जिस शब्द शक्ति से ये अर्थ व्यंजित होते हैं उसे ही व्यंजना कहते हैं, जैसे :

1) राधिका तो कोमल कली है। यानी बहुत नाजुक है।
2) वह तो समाज के लिए काँटा है। यानी बहुत निर्दय है।
3) वह चौदहवीं का चाँद है। यानी बहुत सुंदर है।

अलंकार-प्रयोग : साहित्यिक भाषा की एक विशेषता अलंकारों का प्रयोग है। साहित्यिक भाषा में लक्षणा और व्यंजना के साथ अलंकारों के प्रयोग का विशेष महत्व है। साहित्य में हम किसी बात को सदैव साधारण ढंग से ही नहीं कहते। उसे चमत्कारिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। इस प्रयोजन के लिए उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का सहारा लेना पड़ता है। इनके बिना भाषा में परिष्कार नहीं आता।

पदक्रम परिवर्तन—कभी-कभी वाक्य रचना को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने या किसी बात पर बल देने के लिए वाक्य में शब्दों के क्रम में परिवर्तन कर दिया जाता है। जैसे :

"पढ़ चुके तुम"। यानी तुम बिल्कुल नहीं पढ़ सकते।

साहित्यिक भाषा में प्रायः वाक्य लंबे होते हैं। इस कारण सरल के साथ संयुक्त और मिश्र वाक्यों का पर्याप्त प्रयोग होता है, जैसे :

क) सामने पर्वत शिखरों को कुहरे की चादर ढक रही है और उधर श्याम मेघों के बीच बकपंक्ति लहराती हुई उड़ रही है। घाटी सहमी-सी है और वृक्ष उत्सुक मुद्रा में खड़े हैं।

ख) एक और उदाहरण देखिए।

"सारा जापान कश्मीर की तरह नंदन वन-सा सुंदर है। असंख्य छोटे-मोटे द्वीपों की मालाओं से घिरा यह देश वनों और पर्वतों से ढका है। अधिकांश भूभाग पर पर्वत शिखर और घाटियाँ बिछी हुई हैं। चारों ओर हरियाली छाई है।

तत्सम शब्दावली—साहित्यिक भाषा की शब्दावली में तत्सम शब्दों का प्रयोग खूब होता है जैसे उपर्युक्त गद्यांशों में आपने देखा कि :

क) पर्वत शिखर, श्याम मेघ, वकपंक्ति, उत्सुक मुद्रा

ख) नंदन वन, द्वीपों की माला, वनों और पर्वतों, अधिकांश भूभाग, पर्वत शिखर, रम्य घाटियाँ आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अल्पांग वाक्यों का प्रयोग—साहित्यिक हिंदी की वाक्य रचना में अल्पांग वाक्यों का प्रयोग भी काफी होता है। यानी संदर्भगत अर्थ को देखते हुए वाक्य के कुछ पदों को छोड़ दिया जाता है। यह बात विशेष रूप से उपन्यासों और नाटकों के वार्तालापों आदि में अधिक पाई जाती है, जैसे—

"ठहरो, सुनो"। इस वाक्य में "तुम" और मेरी बात शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। इनका अर्थ हम संदर्भ से समझ लेते हैं।

बोध प्रश्न 1

दो या तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

1) आधारभूत या बीज वाक्य साँचा किसे कहते हैं?

....
....
....
....
....

2) सामान्य हिंदी के प्रयोग का क्षेत्र कौन-सा है?

....
....
....
....
....

3) क्रिया की अन्विति किस-किस घटक के साथ होती है?

....
....
....
....
....

4) विशेषण की अन्विति (लिंग, पुरुष, वचन आदि) में किन-किन से होती है?

....
....
....

....

....

5) साहित्यिक हिंदी के बारे में नीचे लिखे कथनों का सही (√) या गलत (×) निशान लगाकर उत्तर दीजिए।

क) साहित्यिक हिंदी में केवल अभिधा का प्रयोग अधिक होता है। ☐

ख) साहित्यिक हिंदी में अंलकारों का प्रयोग इसकी विशेषता है। ☐

ग) साहित्यिक हिंदी में अल्पांग वाक्यों का प्रयोग नहीं होता। ☐

घ) साहित्यिक हिंदी में व्यंजना और लक्षणा का प्रयोग होता है। ☐

8.5 प्रयोजनमूलक हिंदी वाक्य संरचना की विशेषताएँ

आप पढ़ चुके हैं कि प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा का वह रूप है जिसका प्रयोग किसी प्रयोजन विशेष से होता है। हम भाषा के प्रयोग के आधार पर उसके दो रूप मान सकते हैं—एक तो वह रूप जिसका प्रयोग जीवन में रोजमर्रा के कार्यों के संदर्भ में होता है। इसे कोई भी मातृभाषी अपने आसपास के परिवेश में व्यवहार द्वारा सीखता है। इसे सामान्य हिंदी कह सकते हैं। इसके अलावा भाषा का एक दूसरा रूप भी होता है जिसका प्रयोग विशिष्ट संदर्भों में विशेष प्रयोजनों के लिए किया जाता है। इसका ज्ञान विशेष प्रयत्न करके प्राप्त किया जा सकता है। इसे ही प्रयोजनमूलक हिंदी कह सकते हैं। इसे व्यावहारिक हिंदी भी कहते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी का रूप सामान्य हिंदी से भिन्न होता है इसलिए हिंदी भाषी को भी इसे प्रयत्न करके सीखना पड़ता है। अब यह प्रश्न उठ सकता है कि इसका प्रयोग किन-किन प्रयोजनों के लिए किया जाता है? वास्तव में, जीवन में जितने संदर्भ हैं उतने ही प्रयोजनमूलक हिंदी के हो सकते हैं।

फिर भी प्रमुख विशिष्टताओं के आधार पर भाषा की कुछ प्रयुक्तियाँ निर्धारित की गई हैं जिनकी चर्चा हम इकाई 7 में कर चुके हैं। प्रयुक्ति संकल्पना के बारे में भी आप इकाई 7 में विस्तार से पढ़ चुके हैं। यहाँ हम प्रयोजनमूलक हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषताओं के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करेंगे।

1) प्रयोजनमूलक हिंदी की वाक्य संरचना का आधार सामान्य हिंदी वाक्य संरचना होती है। इसका आधारभूत ज्ञान आवश्यक है। इससे भाषा के मानक रूप का पता चल जाता है।

2) **भाषा के विशिष्ट क्षेत्र या "प्रयुक्ति" की तकनीकी शब्दावली** : प्रयोजनमूलक हिंदी के अलग-अलग प्रयोग क्षेत्रों में शब्दावली बदलती रहती है। आप जिस क्षेत्र में काम करेंगे उस क्षेत्र की विशिष्ट शब्दावली को जानना जरूरी है जैसे कार्यालयी संदर्भ में आपको कार्यालयी काम-काज—टिपणी, मसौदा लेखन आदि में प्रयोग में आने वाली शब्दावली का आनी चाहिए। उदाहरणार्थ—

   क) **कार्यालयी संदर्भ में:**

   संविधान, राजस्व, बजट सत्र, लिपिक, अनुभाग, सचिव, आदेश, टिप्पण, सेवा पंजी, प्रस्ताव, अधीक्षक, निदेश, अनुदेश आदि।

   ख) **बैंकिंग संदर्भ में:**

   चेक, खाता, लॉकर, ऋण, ब्याज, नामे, जमाकर्ता, जमानत, पट्टे पर, विनिमय, सावधि जमा, चालू खाता, लियन पत्र आदि।

3) **वाक्य संरचना में अंतर** : सामान्य हिंदी में प्रायः हम कर्तरि प्रयोग करते हैं यानी वाक्य में कर्ता प्रधान होता है जैसे, "मां मुझे प्यार करती है"। ऐसा ही वाक्य कार्यालयी संदर्भ में देखिए—"निदेशक कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई कर सकता है।" परंतु प्रयोजनमूलक हिंदी में प्रायः "**कर्मणि प्रयोग**" अधिक होता है। जैसे—

   "कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है।" इसलिए हम कह सकते हैं कि प्रयोजनमूलक हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता कर्मवाच्य संरचना है। कुछ उदाहरण देखिए :

   क) आयोग की सिफारिशें मान ली गई हैं।

कमजोर वर्गों के रोजगार के लिए कदम उठाए जाएँगे।
लोकसभा का बहिष्कार किया गया।

4) सामान्य भाषा एवं साहित्यिक भाषा की शैली लाक्षणिक, व्यंजनापूर्ण, अलंकार युक्त होती है और उसमें कभी-कभी अधूरे (अल्पांग) वाक्यों का भी प्रयोग हो सकता है परंतु प्रयोजनमूलक हिंदी की अभिव्यक्ति अभिधा प्रधान होती है। उसमें अलंकारों तथा लाक्षणिक और व्यंजनापूर्ण शैली की गुंजाइश नहीं होती। यहाँ हमारा उद्देश्य ऐसा भाषा का प्रयोग होता है जिसमें किसी प्रकार के संदेह या द्वि-अर्थकर्ता की गुंजाइश नहीं हो। बात सीधी और स्पष्ट हो।

5) सामान्य हिंदी स्वरूप अनौपचारिक होता है जबकि प्रयोजनमूलक भाषा सामान्यतः औपचारिक होती है। इसका प्रयोग औपचारिक संदर्भों में ही होता है जैसे — आपको किसी कार्यालय में अर्जी देनी हो, समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखना हो, बैंक से ऋण के लिए आवेदन करना हो।

6) हमने प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रायः सभी प्रयुक्तियों को मूल रूप में अंग्रेजी से ग्रहण किया है। इसके लिए हमें अनुवाद का सहारा लेना पड़ा। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि हिंदी अनुवाद पर अंग्रेजी की छाया दिखाई देती है। इसलिए हिंदी की वाक्य रचना पर भी अंग्रेजी का प्रभाव दिखाई देता है—नीचे दिए वाक्यों की तुलना कीजिए—

— सिलिकॉन और जर्मेनियम ऐसे पदार्थ हैं जिनका अर्ध-चालक के रूप में अधिकतर प्रयोग किया जाता है। (इसमें अंग्रेजी की छाया दिखाई देती है)

— हिंदी के अपने ढंग पर लिखा गया वाक्य होगा—
'सिलिकॉन और जर्मेनियम पदार्थों का अर्ध-चालक के रूप में प्रयोग करते हैं।'

7) क) प्रयोजनमूलक हिंदी सूचना प्रधान होती है। इसके माध्यम से हम कोई सूचना या संदेश प्रेषित करते हैं।

ख) प्रयोजनमूलक भाषा का रूप लिखित होता है। बोल-चाल में उसका प्रयोग नहीं हो सकता। घरेलू संदर्भ में हम कार्यालयी भाषा का प्रयोग नहीं करते। हम कभी ऐसा नहीं कहते "श्रीमती जी खाना प्रस्तुत कीजिए" या "मुझे सौ रुपए दिए जाएं" आदि

प्रयोजनमूलक हिंदी की वाक्य संरचना और स्वरूप इसके विभिन्न प्रयुक्ति क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा से और अधिक स्पष्ट होगा। इन प्रयुक्तियों की वाक्य संरचना के बारे में हम अलग-अलग खंडों में विस्तार पूर्वक विचार करेंगे।

8.5.1 कार्यालयी हिंदी की वाक्य संरचना

1) कार्यालय हिंदी का प्रयोग कार्यालयी प्रशासन में टिप्पणी लेखन, मसौदा लेखन तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जाता है। इसकी अपनी पारिभाषिक शब्दावली है जो इसकी वाक्य संरचना को अन्य प्रयुक्तियों से अलग करती है।

2) कार्यालय हिंदी का स्वरूप तकनीकी लिखित और औपचारिक होता है। इसमें कार्यालयी संदर्भ की तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है और इसका व्यवहार औपचारिक प्रयोजनों में लिखित रूप में होता है। कार्यालय हिंदी शब्दावली के कुछ उदाहरण हैं—फाइल, अनुभाग, अदालत, हलफनामा, प्रस्ताव, आवेदन पत्र, अधिकारी, दफ्तर आदि।

3) कार्यालय हिंदी की भाषा सूचना प्रधान होती है यानी इसके द्वारा कर्मचारियों और अधिकारियों तथा विभागों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है।

4) कार्यालयी हिंदी में अभिधा का प्रयोग होता है। यानी कार्यालयी भाषा में एकार्थकता का होना आवश्यक है ताकि विचारों के आदान-प्रदान में किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश न हो।

5) इसमें समस्रोतीयता आवश्यक नहीं है। सामान्य मानक वाक्य संरचना में तत्सम शब्दों के साथ तत्सम तद्भव शब्दों के साथ तद्भव शब्दों का प्रयोग होता है। सामान्यतया तत्सम और उर्दू शब्दों का मेल नहीं होता। परंतु कार्यालयी हिंदी में यह आवश्यक नहीं है। इसमें भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त शब्दों का साथ-साथ प्रयोग किया जा सकता है जैसे :

क) मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत/पेश है।
ख) वैयक्तिक हैसियत से ऐसा पत्र प्रेषित किया गया है।

ग) मिसिल पर शीघ्र कार्रवाई की जाए।

6) व्यक्ति निरपेक्ष रचना कार्यालयी हिंदी की विशेषता है। कार्यालयी हिंदी का प्रयोग प्रशासन व्यवस्था के अधिकारी/कर्मचारी करते हैं। ये जब इसका प्रयोग करते हैं तो ये व्यक्ति न होकर सरकारी तंत्र के अंग होते हैं। इसलिए इनका कथन व्यक्ति निरपेक्ष होता है। जैसे :

   यह परिपत्र सभी कर्मचारियों में घुमा दिया जाए।

   इस वाक्य संरचना में संरचना कर्मवाच्य में होती है और कर्ता का लोप हो जाता है

7) कार्यालयी हिंदी की प्रमुख विशेषता इसकी कर्मवाच्य वाक्य संरचना है। सरकारी व्यवस्था में निर्णय सरकारी तंत्र द्वारा किया जाता है, किसी व्यक्ति द्वारा नहीं। इसलिए कार्यालयी वाक्य संरचना कर्मवाच्य में होती है। इसमें व्यक्ति अदृश्य रहता है, जैसे :

   क) श्री शेखर को सहायक पद पर नियुक्त किया जाता है।
   ख) श्री मनोहर की अर्जित छुट्टी मंजूर की जाती है।
   ग) श्री रामन को संगोष्ठी में भाग लेने की अनुमति दी जा सकती है।

8) कार्यालयी हिंदी पर अंग्रेजी के अनुवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। इसका कारण यह है कि कार्यालयी हिंदी का उद्भव मूलतः अंग्रेजी से हुआ है। कहीं-कहीं ऐसा प्रतीत होता है जैसे कार्यालयी हिंदी-अंग्रेजी का शब्दशः अनुवाद हो। यही इसका कमजोर पक्ष है। इस कारण कार्यालयी हिंदी कही-कहीं अस्वाभाविक, अस्पष्ट और दुर्बोध हो जाती है। इसकी झलक हमें समाचारों में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों, निविदाओं, अधिसूचनाओं आदि में दिखाई देती है। उदाहरण देखिए :

   1) "स्टील प्रोडक्ट्स लिमिटेड एतद् द्वारा सूचना दी जाती है"
   2) "अधोहस्ताक्षरी द्वारा अधोलिखित कार्यों के निष्पादनार्थ हरियाणा लो.नि.वि.भ.व.प. निर्माण के स्वीकृत की समुचित श्रेणी को स्वीकृत ठेकेदार—"

   ये सूचनाएं कितनी उपयोगी हैं यह नहीं कहा जा सकता। इसकी अपेक्षा व्यापारिक संस्थाओं के विज्ञापनों की भाषा कहीं अधिक प्रभावशाली होती है। यह भाषा अंग्रेजी मूल का मक्खीमार अनुवाद है। हमें अपने लेखन या प्रयोग में ऐसी वाक्य संरचनाओं से बचना चाहिए।

   कार्यालयी हिंदी में टिप्पण और मसौदा लेखन में हमें मौलिक रूप से हिंदी में चिंतन करके लिखना चाहिए उसके लिए अंग्रेजी की शब्दावली या वाक्यों का अनुवाद नहीं करना चाहिए।

   कार्यालयी हिंदी के बारे में विस्तार से चर्चा खंड 3 और 4 में की जाएगी जहां आपको कार्यालय हिंदी की संवैधानिक स्थिति, कार्यालयी हिंदी में प्रयुक्त शब्दावली तथा टिप्पणी लेखन और मसौदा लेखन के विभिन्न प्रकारों और उनके लेखन के तरीके बताए जाएंगे।

8.5.2 व्यापार, वाणिज्य एवं बैंकिंग हिंदी की वाक्य संरचना

व्यापार और वाणिज्य का क्षेत्र जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है। इसका संबंध समाज के सभी वर्गों से होता है और इसका विस्तार भी देश-विदेश में होता है। व्यापार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है बाजार। बाजार की भाषा में व्यक्ति निरपेक्षता, कर्मवाच्य, संरचना आदि तो पाई ही जाती है इनकी शब्दावली भी पारंपरिक होती है। अतः इसकी भाषा तकनीकी होते हुए भी सबके समझने लायक होती है। बैंकिंग व्यवस्था का संबंध रुपए या वस्तुओं के आदान-प्रदान से होता है। बैंक जनता के रुपए के प्रबंध में मदद करता है। लोग बैंक की विभिन्न जमा योजनाओं में रुपए का निवेश कर सकते हैं। रुपया जमा करने पर बैंक ब्याज देता है। लोग बैंकों से विभिन्न प्रयोजनों के लिए ऋण ले सकते हैं। यानी बैंकिंग व्यवस्था में रुपए का लेन-देन होता है, इसलिए बैंकिंग व्यवस्था में—लेना, देना, जमा करना, निकालना, भेजना, मंगाना आदि क्रियाओं का अधिक प्रयोग होता है।

व्यापार और वाणिज्य से संबंधित बहुत से कार्य जैसे लेखाकरण, बैंकिंग व्यवस्था व्यक्तिपरक न होकर संस्थापरक है, इसलिए अमूर्तता और संस्थापरकता के भाव की अभिव्यक्ति होती है। इस कारण वाक्यों में "कर्ता" का लोप हो जाता है यानी व्यक्ति निरपेक्ष वाक्य संरचना होती है। संस्थापरकता की अभिव्यक्ति सामूहिक संबोधन से होती है :
जैसे—

केनरा बैंक ने 18% पर श्री रामलाल को उधार दिया।
श्री रामलाल को 18% पर उधार दिया गया।

बैंक इस साल कर्मचारियों को 30 दिन का बोनस देगा।

सभी बैंक एक साल की जमा पर 13% ब्याज देते हैं।

बैंकिंग हिंदी में प्रयुक्त होने वाली हिंदी की वाक्य संरचनाओं की विशेषता :

1) कर्ता का लोप
2) व्यक्ति निरपेक्षता/अप्रत्यक्षता
3) बैंकिंग संदर्भ की विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग
4) बैंकिंग हिंदी में निम्नलिखित प्रकार की वाक्य संरचनाओं का प्रयोग होता है।

1) है/था सहायक क्रियाओं से बनने वाले वाक्य जैसे—
   यहाँ लॉकर सुविधा उपलब्ध है।
   खाते में पर्याप्त रकम नहीं थी।

2) कर्ता प्रधान वाक्य संरचना। सकर्मक क्रिया के साथ—
   चेक काटने वाले ने भुगतान रोक दिया है।
   बैंक में कोई भी व्यक्ति खाता खोल सकता है।

3) क्रिया प्रधान वाक्य संरचना (अकर्मक क्रिया के साथ)—
   चेक काटने वाले के हस्ताक्षर नहीं मिलते।
   चेक की मियाद निकल चुकी है।

4) कर्मवाच्य वाक्य संरचना—
   पैसे का भुगतान कर दिया गया है।
   बैंक में हिंदी में चेक स्वीकार किए जाते हैं।

5) आदेशात्मक वाक्य संरचना—
   यहाँ हस्ताक्षर कीजिए।
   जो जरूरी न हो उसे काट दें।
   एक हजार से अधिक का चेक न काटा जाए।
   निर्धारित फार्म द्वारा ही पैसा निकाला जाए।

6) "चाहिए" के साथ वाक्य संरचना—
   काट-छाँट पर हस्ताक्षर चाहिए।
   पास बुक सँभाल कर रखनी चाहिए।

व्यापार, वाणिज्य या बैंकिंग में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली के कुछ उदाहरण देखिए :

बंधक, दृष्टिबंधक, ग्रहणाधिकार, प्रतिभूति, रेहन, परक्राम्य लिखत, रेखित चेक, निवेश, खातेदार, सांवधिक जमा खाता, बैंक दर, साख, लेन-देन, रिकार्ड, सार संक्षेप।

"राष्ट्रीय बचतों का उत्पादक ढंग से निवेश करना आवश्यक हैं।"
"स्थूल रेहन में ऋणी को वस्तुएँ बैंक के अधिकार में देनी होती है।"
"ग्रहणाधिकार (लियन) में जमानतों को बेचने का नोटिस देना होता है।"

8.5.3 वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना

भारत में वैज्ञानिक हिंदी की बहुत पुरानी परंपरा है। प्राचीन संस्कृत में आयुर्वेद, इंजीनियरी, वस्तुकला, मूर्तिकला आदि के संदर्भ में विशेष प्रयुक्तियों का विकास हुआ है। आरंभ में ये प्रयुक्तियाँ सूत्रबद्ध रूप में या पद्य रूप में थीं। बाद में इन्हें गद्य शैली में लिखा गया। आधुनिक युग में तकनीकी भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना का विकास हुआ। वैज्ञानिक हिंदी के भाषा रूप के प्रयोग के लिए वैज्ञानिक विषय का गहन अध्ययन होना आवश्यक है। जब तक विषय की पकड़ या विषय का समुचित ज्ञान नहीं होगा वैज्ञानिक हिंदी का प्रयोग संभव नहीं।

1) ऊपर उल्लेख किया है कि भारत में आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का आगमन अंग्रेजी के माध्यम से हुआ है। यानी हिंदी में वैज्ञानिक ज्ञान अनुवाद के द्वारा आया है इसलिए वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना पर अंग्रेजी वाक्य रचना का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अनुवाद में कहीं-कहीं अनुवादक शब्दानुवाद कर देता है। ऐसी स्थिति में लेखक का मूलभाव अनुवाद में नहीं आ पाता।

2) वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना का स्वरूप लिखित होता है। इसकी शब्दावली वैज्ञानिक और तकनीकी होती है। शब्दावली में आई ऐसी संकल्पनाओं को समझने की आवश्यकता होती है जहाँ उनमें बहुत सूक्ष्म अंतर हो, जैसे "गति" शब्द से संबंधित तीन शब्द वेग, चाल और गति हैं। इनके प्रकार्यात्मक अंतर को स्पष्ट समझना आवश्यक है।

3) वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना की एक विशेषता उसमें निहित सार्वभौम दृष्टि है। इसलिए वैज्ञानिक तथ्यों का प्रस्तुतीकरण उसी प्रकार की वाक्य संरचना में होना चाहिए। इसके लिए सामान्य वर्तमान और अभ्यासात्मक भूत की वाक्य संरचना का प्रयोग अधिक किया जाता है। जैसे :

   क) आक्सीजन और हाइड्रोजन को नियत अनुपात में मिलाने से पानी बनता है।
   ख) तांबे पर सल्फ्यूरिक अम्ल डालने से कॉपर सल्फेट बनता है।
   ग) ट्रांजिस्टर छोटे निवेश संकेतों को परिवर्धित कर सकता है।

   इसके अलावा वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना में संकेत वाचक या हेतु बोधक वाक्यों का पर्याप्त प्रयोग होता है। जैसे :

   घ) यदि तांबे को सल्फ्यूरिक अम्ल में डाला जाए तो कॉपर सल्फेट बनता है।

वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना

वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना में तकनीकी वैज्ञानिक शब्दावली का प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है इसलिए वैज्ञानिक हिंदी की वाक्य संरचना संस्कृतनिष्ठ होती है क्योंकि पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में संस्कृत को आधार माना गया है। शब्दावली के कुछ उदाहरण देखिए :

> परमाणु नाभिक, विखंडन, समस्थानिक, विद्युतदर्शी, उत्सर्जन, शृंखला, अभिक्रिया, ऊर्जा, भौतिक परिवर्तन, धंनावेशित परिरक्षक

इस प्रकार की संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के कारण तथा समस्रोतीयता को ध्यान में रखते हुए वाक्य रचना परिनिष्ठित संस्कृत की हो जाती है कुछ उदाहरण देखिए :

क) "भू उपग्रह पृथ्वी का चक्कर कैसे लगाता है? यद्यपि पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति इसे नीचे की ओर खींचती है परंतु इसकी गति लगभग 8000 मी. प्रति सेकंड होती है।"

ख) "जब रेडियोएक्टिव तत्व रेडियम विघटित होता है तो यह एकाधिक कणों को विसर्जित करता है। इनमें से कुछ पर विद्युत का धनावेश होता है और कुछ पर ऋणावेश।"

वैज्ञानिक (हिंदी) की शैली प्रायः वर्णनात्मक होती है। इसमें तकनीकी शब्दों का प्रयोग अधिक होता है, इसलिए भाषा कुछ कठिन प्रतीत होती है।

8.5.4 जनसंचार की हिंदी की वाक्य संरचना

1) जनसंचार विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। जनसंचार माध्यम का प्रयोग दो अलग-अलग रूपों में होता है। एक ओर इसका प्रयोग समाचार-पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं में होता है तो दूसरी ओर रेडियो, टेलीविजन और वीडियो कैसेटों के रूप में होता है। इनमें से एक का स्वरूप लिखित है तो दूसरे का मौखिक एवं दृश्य।

2) जनसंचार की भाषा सूचना प्रधान होती है। समाचार-पत्रों के माध्यम से देश-विदेशों के समाचारों को जनसामान्य तक पहुँचाया जाता है।

3) जनसंचार की हिंदी वाक्य संरचना में जनसंचार क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली का व्यवहार होता है। इसमें बोलचाल की हिंदी-उर्दू मिश्रित शब्दावली की ओर झुकाव रहता है जिसे जनसामान्य आसानी से समझ सकता है।

4) समाचार पत्रों के शीर्षकों की भाषा चुस्त होती है। इसमें प्रायः अल्पांग वाक्यों का प्रयोग होता है। इन शीर्षकों में क्रिया पदबंधों का सामान्यतः लोप कर दिया जाता है तथा कर्मणि प्रयोग अधिक होता है, कुछ उदाहरण देखिए :

   — राहत कार्यों के लिए दो करोड़ रुपए (मंजूर किए गए)
   — अल्पसंख्यक आयोग का अध्यक्ष एक सप्ताह में (नियुक्त हो जाएगा)
   — संसद के दोनों सदनों में भारी हंगामा (हुआ)
   — प्रधान मंत्री द्वारा "पत्र व्यवहार" के प्रकाशन की मांग अस्वीकार (की गई)

यहां अल्पांग वाक्यों को पूरा करने वाले क्रिया पद कोष्ठक में दिए गए हैं।

5) जनसंचार की वाक्य संरचना में सरल, संयुक्त और मिश्र सभी प्रकार के वाक्यों का प्रयोग होता है। समाचार-पत्रों के संपादकीय की भाषा जटिल होती है। उसमें संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों का प्रयोग अधिक होता है। भाषा में संक्षिप्तता लाने के लिए समस्त पदों का भी पर्याप्त प्रयोग होता है। जैसे :

   बाढ़ स्थिति भयंकर, ब्रिटेन यात्रा, रिजर्व बैंक गवर्नर ने कहा, गेहूँ आयात, अयोध्या-मसले के हल के लिए, राशन दुकान का लाइसेंस रद्द।

6) ऊपर उल्लेख किया गया था कि पत्राचार की भाषा हिंदी-उर्दू मिश्रित होती है। इसके पदबंधों में असाधारण प्रकार की अन्विति दिखाई देती है। जो जनसंचार की भाषा की विशेषता है। इसका एक नमूना आगे प्रस्तुत किया गया है, उदाहरण देखिए :

   रूस और अमरीका की दोस्ती अब ऐसे दौर में पहुँच गई है कि वह दुनिया के देशों पर असाधारण असर कर सकती है। इस दोस्ती का स्वागत होना चाहिए क्योंकि यह दोनों देशों को अधिक जिम्मेदार बनाती है। मगर इसके नतीजों को भी समझ लेना उचित होगा।

   असाधारण अन्विति पर ध्यान दें:

असाधारण अन्विति		साधारण अन्विति
असाधारण असर	=	असाधारण प्रभाव
दोस्ती का स्वागत	=	मित्रता का स्वागत
अधिक जिम्मेदार	=	ज्यादा जिम्मेदार/अधिक उत्तरदायी

7) जनसंचार हिंदी की शब्दावली में तत्सम और उर्दू दोनों प्रकार के शब्द मिलते हैं। ऊपर दिए समाचार की शब्दावली पर ध्यान दें तो इन शब्दों को निम्नलिखित प्रकार से तत्सम और उर्दू शब्दों में विभाजित किया जा सकता है :

तत्सम	उर्दू
असाधारण, स्वागत, देश,	दोस्ती, दौर, दुनिया, असर,
उचित, अधिक	जिम्मेदार, नतीजे

   शब्दावली के प्रयोग में समान स्रोतीयता पर ध्यान नहीं दिया जाता यानी एक ही वाक्य में हिंदी और उर्दू दोनों स्रोतों के शब्दों का प्रयोग हो सकता है।

8) संचार माध्यम के रूप में पत्रकारिता और दूरदर्शन-रेडियो—

   क) संचार माध्यमों के हमें दो रूप मिलते हैं। एक रूप लिखित होता है जिसका प्रयोग समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं में मिलता है। इसका स्वरूप औपचारिक होता है तथा इसमें पत्रकारिता की तकनीकी शब्दावली तथा सामान्य वाक्य संरचना का प्रयोग होता है। पत्रकारिता के कुछ विशिष्ट स्तंभ या पृष्ठ होते हैं, जैसे—खेल का पृष्ठ, वाणिज्य-शेयर, वस्तुओं के मोल-भाव से संबंधित पृष्ठ। इन सबकी अपनी-अपनी अलग शब्दावली होती है।

   वाणिज्य-व्यापार क्षेत्र के कुछ वाक्यांश देखिए :

   सोना लुढ़का, चांदी चमकी, चीनी मजबूत, मंदी की वजह से शेयर लुढ़के, सरसों तेल के मूल्य में नरमी

   खेल के क्षेत्र के कुछ वाक्यांश भी देखिए :

   बल्लेबाजी फिर लड़खड़ाई, श्री "क" ने श्री "ख" को धाराशायी किया, कैच लपका, आक्रामक बल्लेबाजी से स्थिति को सुधारा, पारी सिमट गई, एक विकेट झटका, चार विकेट चटकाए, अंक अर्जित किए, चुनौती धाराशायी की।

   ख) संचार माध्यम का दूसरा रूप दृश्य-श्रव्य होता है। आकाशवाणी श्रव्य साधन है जबकि दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य दोनों है। इसमें संदर्भ के अनुसार तकनीकी/गैर तकनीकी भाषा का प्रयोग होता है। इसका स्वरूप मौखिक होता है इसलिए अनौपचारिक होता है। दृश्य-श्रव्य संचार माध्यम का संबंध हर क्षेत्र में दर्शकों और श्रोताओं से होता है इसलिए इसकी भाषा सरल और संस्कृत-उर्दू मिश्रित होती है।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित का सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगा कर उत्तर दीजिए—

क) प्रयोजनमूलक हिंदी में कर्मवाच्य संरचना का अधिक प्रयोग होता है। ☐

ख) वैज्ञानिक हिंदी में अलंकारों का प्रयोग अधिक होता है। ☐

ग) साहित्यिक हिंदी में लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग सामान्य बात है। ☐

घ) कार्यालयी हिंदी में अंग्रेजी से अनुवाद की छाया दिखाई देती है। ☐

ङ) वैज्ञानिक हिंदी में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग अधिक होता है। ☐

2) प्रयोजनमूलक हिंदी किसे कहते हैं? पाँच छः पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

3) कार्यालयी हिंदी की क्या विशेषता है?

....

....

....

....

....

....

4) वैज्ञानिक हिंदी को यह नाम क्यों दिया गया?

....

....

....

....

....

....

5) संचार की हिंदी के प्रयोग के क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

....

....

....

....

....

....

6) बैंकिंग हिंदी में कैसी शब्दावली का प्रयोग होता है?

....

....

....

....

....

....

8.6 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि:

— वाक्य रचना का अभिप्राय क्या है और स्वरूप कैसा होता है, किस प्रकार विभिन्न घटक एक-दूसरे से संबद्ध होकर वाक्य-विन्यास में योगदान करते हैं।

— सामान्य हिंदी-वाक्य संरचना की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। वाक्य संरचना में कुछ घटक अनिवार्य होते हैं और कुछ ऐच्छिक। वाक्य में विभिन्न घटकों में अन्विति का विशेष महत्व है। अन्विति कभी क्रिया की कर्ता के साथ होती है और कभी कर्म के साथ इसके अलावा संज्ञा पदबंध में भी अन्विति पाई जाती है।

— सामान्य हिंदी के संदर्भ में साहित्यिक हिंदी की वाक्य संरचना में कुछ विशेषताएँ हैं। साहित्यिक हिंदी की शैली लाक्षणिक और व्यंजनापूर्ण होती है, इसमें अलंकारों का प्रयोग होता है और भाषा संस्कृतनिष्ठ होती है।

— प्रयोजनमूलक हिंदी की वाक्य संरचना की विशेषताओं और सामान्य हिंदी-वाक्य संरचना से उसके अंतर को स्पष्ट रूप से आपने समझा।

— इस इकाई में आपने यह भी पढ़ा कि किस प्रकार विभिन्न संदर्भों में भाषा के रूपों में परिवर्तन हो जाता है।

8.7 शब्दावली

मानकरूप — भाषा के मानक रूप से अभिप्राय उस भाषा रूप से है जो किसी भाषा का आधारभूत रूप होता है। इसका प्रयोग शिक्षा माध्यम सामान्य व्यवहार के लिए किया जाता है।

तत्सम शब्द — संस्कृत के हिंदी में प्रयुक्त शब्द।

सामासिक संस्कृति — देश के सभी भागों की मिलीजुली संस्कृति।

अनिवार्य घटक — ऐसे घटक जिनका किसी वाक्य संरचना में होना आवश्यक है।

ऐच्छिक घटक — ऐसे घटक जिनके बिना वाक्य संरचना पर कोई अंतर न पड़े।

अन्विति — वाक्य के किसी अंश का लिंग, वचन, पुरुष आदि की दृष्टि से दूसरे अंश के अनुरूप होना।

पूर्णांग वाक्य — ऐसा वाक्य जिसमें वाक्य के अनिवार्य घटक हों।

अल्पांग वाक्य — ऐसा वाक्य जिसमें वाक्य के न्यूनतम अनिवार्य घटक न हों।

कर्तरि प्रयोग — जब क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार होता है तो उसे कर्तरि प्रयोग कहते हैं।

कर्मणि प्रयोग — जब क्रिया का रूप कर्म के अनुसार होता है तो उसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं।

8.8 सहायक पुस्तकें

प्रो. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, *प्रयोजनमूलक हिंदी* : केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1867

प्रो. सूरजभान सिंह, *हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण,* साहित्य सहकार, दिल्ली, 1985

हिंदी भाषा विज्ञान अंक, 1973, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली

डा. गोपाल शर्मा, *प्रयोजनी हिंदी स्वरूप और व्यापकता*—विश्व हिंदी सम्मेलन अंक, 1875, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आधारभूत या बीज वाक्य साँचे वे होते हैं जिनसे और वाक्यों का निर्माण हो सकता हो।
2) सामान्य हिंदी का व्यवहार सामान्य शिक्षित वर्ग करता है। यही भाषा उच्चतर माध्यमिक स्तर तक हिंदी भाषी क्षेत्रों में शिक्षा का माध्यम भी है। इसका व्यवहार स्टेशन, डाकघर, बाजार, स्कूल आदि सार्वजनिक स्थानों पर होता है।
3) वाक्य में क्रिया की अन्विति सामान्यतः कर्ता के साथ होती है परंतु सामान्य भूत काल में यदि क्रिया सकर्मक हो तो क्रिया की अन्विति कर्म के साथ होती है।
4) विशेषण की अन्विति संज्ञा के लिंग-वचन के अनुसार होती है।
5) क) गलत ख) सही ग) गलत घ) सही ङ) सही।

बोध प्रश्न 2

1) क) सही ख) गलत ग) सही घ) सही ङ) सही
2) प्रयोजनमूलक हिंदी, हिंदी भाषा का वह रूप है जिसका प्रयोग विशिष्ट संदर्भ में होता है। इसका स्वरूप सामान्य हिंदी से भिन्न होता है। इसमें क्षेत्र विशिष्ट की शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। इसकी वाक्य संरचना में कर्मवाच्य वाक्य संरचना का प्रयोग अधिक होता है।
3) कार्यालय हिंदी प्रयोजनमूलक हिंदी की ही एक प्रयुक्ति है। इसका प्रयोग कार्यालय प्रशासन में टिप्पणी लेखन और मसौदा लेखन आदि के लिए किया जाता है। इसमें कार्यालय क्षेत्र की शब्दावली होती है।
4) वैज्ञानिक हिंदी का प्रयोग वैज्ञानिक संदर्भ में होता है। इसमें विज्ञान की तकनीकी शब्दावली होती है, इसलिए इसे वैज्ञानिक हिंदी कहा गया है।
5) संचार माध्यमों की हिंदी का प्रयोग संचार के विभिन्न माध्यमों में होता है। एक ओर इनका प्रयोग समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में लिखित रूप में होता है। दूसरे रेडियो, टेलीविजन और वीडियो कैसेट जैसे दृश्य श्रव्य संचार माध्यमों में इसका प्रयोग होता है।
6) बैंकिंग हिंदी में बैंकिंग संदर्भ में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का प्रयोग होता है।